

INTERNATIONAL JOURNAL OF SOCIETY AND HUMANITIES



**International Peer Reviewed
and Refereed Journal**

Vol-18/2021 No.-1

**Chief Editor:
Dr. Erfan Ahmad**



ISSN- 2319-2070

International Journal of Society and Humanities

**Biannual Journal
International Peer Reviewed and Refereed Journal**



International Journal of Society and Humanities

Edition: January to June, 2021, Vol-18, No-1,

ISSN- 2319-2070

Periodicity: Biannual

Published by:

VL Media Solutions

B-33, Sainik Nagar, Uttam Nagar, New Delhi-110059, India

Phone- +91-11-64627580, 08010207580

Email- contact@vlmspublications.in

www.vlmspublications.com

Copyright © Publisher.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, electrostatic, magnetic tape, mechanical, photocopying, recording, or otherwise without permission from the copyright holder.

Permission for other use. The copyright owner's consent does not extend to copying for general distribution, for promotions, for creating new works, or for resale. Specific written permission must be obtained from the publisher for such copying. Author is solely responsible for their views in research paper.



CHIEF EDITOR

Dr. Erfan Ahmad

Sir Syed Nagar, Aligarh, UP

Email: crfanahmad1981@gmail.com Mob: +91-9359480540

EDITORS

Dr. Mohammad Azwar Khan

N.M. Law College,

Hanumangarh Town, Rajasthan

Email: khan.azwar@gmail.com

Mob.: 917014653971

Dr. Rajesh Kumar Pundhir

College Business & Economics

Halhale, Asmara University,

Eritrea* (East Africa)•

Email: rajeshpundhir80@gmail.com

Dr. Shahanshah Gulpham

Department of South African and Brazilian Studies,

AMU, Aligarh, U.P. India.

EDITORIAL BOARD

Dr. Manoj Kumar Jakhar

Former Vice Chancellor, University of Bikaner

Principal N.M. Law College

Hanumangarh Town Rajasthan

nmlpgc@rediffmail.com

Professor Farhat Khan

Vice Prin. Burhani College of

Commerce & Arts (Mumbai)¼

Email: farhat27in@gmail.com

Mob.: 07014653971

Dr. Sanaullah Mir

Professor Department of Philosophy,

AMU, Aligarh, U.P. India

Dr. Md. Haider Ali

Assistant Professor, Department of History,

Doulat Ram College, New Delhi

Email: haiderhistory@gmail.com

Dr. Abdul Rahim Ansari

Assistant Professor,

Department of Economics,

Hindu College, Delhi University

Professor Latif Hussain Shah Kazmi

Department Philosophy, Aligarh Muslim

University, Aligarh-202002 (U.P.)¼

Email: latifkazmi@gmail.com,

Mobile: +91- 9411413463



Dr. Mohammad Sharif
Professor,
Department of Sanskrit, AMU
Aligarh, U.P. India.

Dr. Sarfaraz Javed
Assistant Professor,
Mazoon Collage Oman
Email: sarfaraz.javed@jit.edu.in

Professor Parul Varshney
M.A. Ph.D.(Economics¼, M.B.A.
(H.R¼
Professor and Academic Coordinator,
LBS College, Kota (Raj)

Professor Gagandeep Kaur
Assistant, Sol. University of Patroliu
and Energy Studies, Dehradun
91-9216432100

ADVISORY BOARD

Dr. Rani Majumdar
Professor, Department of Sanskrit, AMU Aligarh, U.P. India

Dr. Chhatrasal Singh
Associate Prof, Department of Education, J.N.M. College BBK, (Avadh University¼,

Dr. Aftab Ahmad Ansari
Assistant Prof. Department of Education, Darbhanga Centre MANUU, Hyderabad
Email: aftab_deo@yahoo.com

Dr. Mohammad Rauf
Senior Lecturer, Faculty of Shari"ah and Law, Maldives National University
Email: ruaufscholar@gmail.com

Deepan Das
Assistant Professor, Department of Political Science,
Radha Govinda Borua College, Guwahati
Emial: deepand600@gmail.com



About The Journal

International Journal of Society and Humanities (IJSH) is a peer-reviewed, Multi-lingual as well as Multi-Disciplinary international journal dedicated to the Research studies of all aspects of society and humanities across and beyond the boundaries of the Nation. Exclusively, It focused on the Work related to Philosophy, History, Geography, Political Science, Public Administration, Human Rights, Economics, Management, Commerce, Education, Islamic Studies, Anthropology, Sociology, Social Work, Mass Communication, Fine Arts, Law, Hindi, English, Urdu, Sanskrit, Environmental, Developmental issues, and ethical questions related to scientific research. The Journal seeks to place society and humanities traditions as its central focus of academic inquiry and to encourage comprehensive consideration of its many facets; to provide a forum for the study of humanities and societies in their global context; to encourage interdisciplinary studies of the world affairs that are cross-national and comparative; to promote the diffusion, exchange and discussion of research findings; and to encourage interaction among academics from various traditions of learning.

The bi-annual review consists articles, research papers and book review considered to be of wide interest across the field selected by our editorial team in consultation with the Advisory Board. We do not accept direct submissions to the bi- annual review. Candidates for inclusion in the survey journal will include top-ranked articles, works by invited contributors, papers offered by plenary speakers at the conference, and articles selected from thematic journal submissions for their wide applicability and interest across the field.

Dr. Erfan Ahmad

(Editor in Chief)

Contents

Articles & Contributors	Page
Sustainable Development Challenges and Strategies in Developing Countries Particularly in India <i>Prof. Nasrin, Rabiul Awal</i>	1
Revisiting Sir Syed in the Contemporary World <i>Adeel Ahmad</i>	10
Child Rights: An Analysis in the Light of Fundamental Rights and Fundamental Duties <i>Arti Sharma</i>	16
Legal Rights of Unborn Child: Need of Environmental Protection from Birth Defects - New way to Protect Unborn <i>Husna Ara</i>	22
Indo- Saudi Arabia Bilateral Trade Relations: Challenges and Opportunities <i>Firoz Alam</i>	29
Language and Polemics: Special Reference to ' Shri Inderesh Kumar Ji's '(Rss Leader, Head of Muslim Rashtriya Morcha¼ Speeches, Its Critical Discourse Analysis. <i>Syed Umer Ahmad Qadri</i>	35
Analysing Religious freedom and Equality in India: A Study of Present Scenario <i>Nargis Mahtab</i>	42
तीसरे-लिंग की जीवन संघर्ष की कहानी <i>निदा</i>	48
गाँधीवाद और विष्णु प्रभाकर का साहित्य <i>फिरोज आलम</i>	52

गाँधीवाद और विष्णु प्रभाकर का साहित्य

फिरोज आलम

Sripur No-3, P.O. - Sripur Bazar, P.S.-Jamuria, Dist-Paschim Bardhman, Pin-713373, West bengal

हिन्दी भाषा और साहित्य पर महात्मा गाँधी का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। गाँधी जी की नीतियों तथा सिद्धान्तों ने सामान्य जनो को तो प्रभावित किया ही, साहित्यकारों ने भी गाँधी जी के आदर्श तथा सिद्धान्तों को अपने साहित्य का आधार बनाया। साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक 'सौहार्द', 'अहिंसा', 'नैतिक उत्थान', 'सर्वधर्म सम्भाव', 'सत्य की रक्षा', 'अस्पृश्यता निवारण' आदि का संदेश भी दिया। गाँधी जी ने अपने सिद्धान्तों और आदर्शों के मार्ग पर चलकर ही स्वाधीनता संग्राम में अपनी भागीदारी को प्रभावशाली बनाया। गाँधी विचारधारा में मानवता का विशेष महत्त्व है जो सत्य और अहिंसा के मार्ग पर ही चलकर प्राप्त किया जा सकता है- "गाँधी जी ने समग्र मानव समाज के आत्मिक उत्थान की आवश्यकता को सर्वोपरि महत्त्व प्रदान किया। समाज को एक अंग के रूप में मनुष्य का उत्थान हो, यह तो एक महत्त्वपूर्ण बात है ही, इसके साथ-साथ गाँधी जी की यह महती आकांक्षा थी कि सम्पूर्ण समाज नैतिक मापदण्डों को अंगीकृत करें। व्यक्ति और समाज दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। इसलिए दोनों के उत्थान को गाँधी जी अपरिहार्य मानते थे।"

गाँधी की विचारधारा ने हिन्दी के साहित्यकारों को भी बहुत अधिक प्रभावित किया। हिन्दी की कविताएँ हों या कथा-साहित्य, कवि हों या कथाकार किसी न किसी रूप में गाँधी के विचारों से प्रभावित दिखायी देते हैं। कथाकार के रूप में प्रेमचन्द और जैनेन्द्र के साहित्य पर गाँधी के विचारों का प्रभाव खूब दिखायी देता है। प्रेमचन्दोत्तर रचनाकारों में विष्णु प्रभाकर एक ऐसे रचनाकार के रूप में सामने आते हैं जिन्होंने गाँधी के आदर्शों तथा सिद्धान्तों को आधार बनाकर अपने साहित्य का सृजन किया। विष्णु जी पूर्ण रूप से गाँधी समर्थक हैं। उनका साहित्य गाँधी के सिद्धान्तों और आदर्शों पर ही चलकर खड़ा हुआ है। 21 जून 1912 ई. को जिला मुजफ्फर नगर के गाँव मीरापुर में जन्में विष्णु प्रभाकर 7-8 साल की उम्र में ही गाँधी के विचारों से प्रभावित होने लगे। राष्ट्रीय स्वाधीनता की चेतना इसी अवस्था में घुलने लगी जिसका प्रभाव यह हुआ कि कांग्रेस की सभाओं में आना-जाना आरम्भ हो गया।

तत्कालीन स्वाधीनता आंदोलनों का विष्णु जी पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। खदर पहनने की भावना इसी अवस्था में जगने लगी। विष्णु जी ने खदर को ऐसा आत्मसात कर लिया कि जीवन भर इससे मुक्त न हुए। अपनी आत्मकथा में इस बात को स्वीकार करते हुए वह लिखते हैं- "मैंने निश्चय किया था कि अगर मैं सीधे स्वाधीनता संग्राम में भाग नहीं ले सकता तो परोक्ष रूप से जो कुछ हो सकेगा वह मैं करूँगा। बहुत सोच-समझकर मैंने चार प्रतिज्ञाएँ लीं। 1. खदर पहनूँगा 2. हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए प्रयत्न करूँगा 3. छूतछात की लानत मिटाने के लिए जो कुछ हो सकेगा, करूँगा और 4. हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिए प्रयत्न करूँगा।"

विष्णु जी का पदार्पण हिन्दी साहित्य में तब हुआ जब देश स्वतंत्रता आंदोलनों के दौर से गुजर रहा था। विष्णु जी ने जब कलम उठाया तब पूरा देश गाँधीमय था। तत्कालीन राष्ट्रीय तथा समाज सुधार आंदोलनों का उनके साहित्य पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। स्वयं विष्णु जी का कथन है- "जब मैंने कलम पकड़ी तो गाँधी जी राष्ट्रीय आंदोलन पर छाए हुए थे। 'देश भक्ति', 'त्याग', 'बलिदान', 'आत्मसमर्पण' अन्याय का प्रतिरोध और कमजोर वर्गों के प्रति क्रियात्मक सहानुभूति जैसे नैतिक मूल्यों पर जोर था। गाँधी जी के साथ ही स्वामी विवेकानन्द के विचारों ने भी प्रभावित किया। वस्तुतः गाँधी जी के मूल्य ही मेरे साहित्य की शक्ति हैं।"

स्वाधीनता संग्राम में एक तरह जहाँ देश की स्वतंत्रता के लिए प्रयास किया जा रहा था, तो वहीं

दूसरी ओर गाँधी जी नारी की मुक्ति तथा उसकी अस्मिता को गरिमा प्रदान करते हुए अपने आंदोलनों में स्त्रियों की सहभागिता के द्वार खोल रहे थे। उनका पूर्ण विश्वास था कि देश को पराधीनता से मुक्त करने में स्त्रियाँ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। स्त्रियों को सशक्त, सबल एवं कर्तव्यनिष्ठ बनाने का उद्देश्य से वे कहते हैं- "स्त्रियाँ स्वयं को अबला मानकर ऐसे कार्यों की उत्तरदायी से मुक्त नहीं हो सकती अबला विशेष आत्मा के संबंध में कदापि लागू नहीं हो सकता। निर्बलता तो शरीर के बारे में कही जा सकती है। एक बालिका जिसकी आत्मा उज्ज्वल है, जिसे आत्मा की प्रतीति हो गई है, वह बालिका साढ़े छः फुट उड़त अंग्रेजों का सामना करके उसे परास्त कर सकती है। जिस स्त्री को अपने अस्तित्व का मान हो गया है। उसका स्त्रीत्व उसके आत्मबल से सुशोभित है। अपने शरीर की दुर्बलताओं को स्वीकार करके जो स्त्री मन से भी दुर्बल बन जाती है वह अपने स्त्रीत्व को सुशोभित नहीं कर सकती। हमारे शास्त्र हमें बतलाते हैं कि सीता, द्रौपदी आदि स्त्रियों ने अपने तेज से दुष्टों को भयभीत कर दिया था।"⁴

गाँधी स्त्री मुक्ति के पक्षधर दिखायी देते हैं। गाँधी जी की प्रेरणा से स्वतंत्रता आंदोलन में स्त्री की अपनी सक्रिय भूमिका निभाती हुई दिखायी देती है- "स्त्रियों के सहयोग के परिणामस्वरूप बहिष्कार के कार्यक्रम सर्वाधिक सफल हुए। शराब की दुकानों के समक्ष धरना देने की कार्यविधि ने सम्पूर्ण जनमानस की चेतना को स्त्री समाज ने प्रभावित किया। भारतीय ललनाओं की इस विलक्षण जागृति ने हमारे विदेशी आलोचकों को भी चौकन्ना कर दिया। वे समझने लगे कि हिन्दूस्तान की स्त्रियाँ आखिर ऐसी मूक और निस्सहाय नहीं हैं जैसा कि वे समझते आए थे। भारत की बहिनों और माताओं की इस अद्भुत सजीवता का सोलहवों आने का श्रेय गाँधी जी के सिवाय किसी और दूसरे को नहीं मिल सकता।"⁵

विष्णु प्रभाकर भी अपने साहित्य में स्त्री-मुक्ति के पक्षधर दिखायी देते हैं। वे स्त्री सम्बन्धी प्रश्नों को अपने साहित्य में बार-बार उठाते हैं और उन्हें अपनी पूरी सहानुभूति प्रदान करते हैं। चाहे वो अर्द्धनारीश्वर की 'सुमिता' हो 'निशिकांत' की 'कमला', 'तट के बंधन' की 'मालती' हो, 'स्वप्नमयी' की 'अलका' या फिर 'कोई तो' की 'वर्तिका' हो इन सभी उपन्यासों में विष्णु जी स्त्री के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए गाँधी दृष्टिकोण अपनाया है।

'कोई तो' उपन्यास को आधुनिक भारतीय समाज का समाजशास्त्रीय दस्तावेज कहा जा सकता है, इस उपन्यास के संदर्भ में स्वयं विष्णु जी का मत है- "कोई तो उपन्यास में वर्णित प्रत्येक घटना पर अलग-अलग उपन्यास लिखा जा सकता था। इसे आप मेरे उपन्यास लेखन में धीरज की कमी न मानें। दरअसल हमारे समाज का मध्यवर्ग मृत आस्थाई और रूढ़िबद्ध मूल्यों को ढोते रहने का आदि हो गया है। वह सड़ रहा है। मैं चाहता था कि उसकी विकृति का कोई पक्ष छूट न पाए। मैं यह भी चाहता था कि नायिका जिन-जिन स्थितियों में टूटती है और जिन आशा-आकांक्षाओं के बारे में उसका मोहभंग होता है, उससे पाठक में बैचेनी पैदा हो। प्रगतिशीलता और विकास का चाहे कितना भी ढोंग रचा जाए मगर मध्यवर्ग की सोच का पहले वाला ही स्तर है, नैतिकता की यह सड़ांध आप 'कोई तो' में अवश्य पाएँगे। इस उपन्यास में मैंने यह भी दिखाया है कि गाँधी के बाद भारतीय राजनीति कितनी नीचे गिर चुकी है।"⁶

साहित्य की लगभग सभी विधाओं में विष्णु जी ने अपना कलम चलाया 'नाटक', 'एकांकी', 'जीवनी संस्मरण', 'निबंध', 'यात्रावृत्तान्त' हो या फिर बच्चों के मनोरंजन के लिए बाल साहित्य सब में विष्णु जी गाँधी जी के मानवता का ही संदेश देते हुए दिखाई देते हैं। कहानी संग्रहों में- 'आदि और अंत', 'रहमान का बेटा', 'जिन्दगी के थपेड़े', 'संघर्ष के बाद', 'धरती अब भी घूम रही है', 'पुल टूटने से पहले', 'सर के साथी', 'खण्डित पूजा' आदि प्रमुख कहानी संग्रहों में जो विषय हैं वो मानवता की ही खोज करते हैं। 'स्नेह', 'प्रेम', 'सौहार्द' तथा सहानुभूति आदि का उद्घाटन मानवीय धरातल पर किया है। यही स्वर उनके नाटक एवं एकांकी में भी मुखर है। 'ऐतिहासिक', 'राजनैतिक', 'सामाजिक' तथा 'मनोवैज्ञानिक' आदि विभिन्न प्रकार के नाटकों के माध्यम से समाज की पुरानी मान्यताओं सामन्त और पूँजीवाद, मनुष्य की दुर्बलताएँ एवं उनकी समस्याएँ आदि को अपना विषय बनाया। वह चाहे 'युगे-युगे क्रान्ति' हो या 'टूटते परिवेश', 'अब और नहीं', 'कुहासा और किरण' हो या 'बंदिनी' इन सभी नाटकों में गाँधी जी के सिद्धान्तों और आदर्शों की छाप स्पष्ट

रूप से देखी जा सकती है। जो मानवता का संदेश देता है। यही वजह थी कि विष्णु जी शरत्चन्द्र के प्रति आकर्षित हुए गाँधी जी शरत्चन्द्र में जो समानता है वो है मानव-प्रेम। यही विष्णु जी का शरत्चन्द्र के प्रति झुकाव का कारण भी बना और पूरे 14 वर्ष लगा दिए शरत्चन्द्र की जीवनी लिखने में। इस बात को स्वीकार करते हुए विष्णु जी लिखते हैं- "गाँधी की जो मूल बात है, जो मूल नीति है जिसे अहिंसा कहा जाता है इसे मैं प्रेम करता हूँ। शरत् की लोकप्रियता तथा उसके प्रति मेरे झुकाव का कारण भी यही रहा कि गाँधी में जो प्रेम था, शरत् में भी वही प्रेम था..... शरत् और गाँधी में जो समानता थी वह मानव-प्रेम था।" विष्णु जी की ऐसी ढेर सारी रचनाएँ हैं जो गाँधी के विचार और उनके आदर्शों से प्रभावित हैं जिनका मूल स्वर अहिंसा और मानव-प्रेम है।

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि विष्णु जी गाँधीवादी लेखक है, वो गाँधी जी की तरह ऐसा समाज बनाना चाहते हैं जहाँ मानवीय मूल्य स्थापित हो। मानवीय मूल्य 'मानव प्रेम', 'सत्य और अहिंसा' के मार्ग पर ही चलकर प्राप्त किया जा सकता है। यही गाँधी जी का मार्ग है और यही सच्चा स्वराज्य है। जो गुलामी का विरोध करता है, अत्याचार का विरोध करता है, जिसमें मुक्ति का प्रावधान है। विष्णु जी के ही शब्दों में- "उत्कृष्ट मानवता की खोज मेरा लक्ष्य है। आकाश के तारों से प्रेम करता हूँ परन्तु यह भी मानता हूँ कि यह धरती भी एक सुन्दर तारा है इसलिए मैं यथार्थ से कभी नहीं भगता पर घटित में सुंदर और शुभ लेने का ही मेरा स्वभाव है। अशुभ का चित्रण भी मैं शुभ की पुष्टि के लिए करता हूँ। 'वर्गहीन', 'अहिंसक समाज' किसी दिन स्थापित हो सकेगा या नहीं लेकिन मेरा विश्वास है कि उसकी स्थापना के बिना विश्व का कल्याण नहीं है।"⁸

संदर्भ सूची-

1. भारत के पुर्ननिर्माण में गाँधी जी का योगदान- डॉ. वीरेन्द्र शर्मा, पृ. 86
2. पंखहीन (आत्माकथा) भाग-1- विष्णु प्रभाकर, पृ. 118
3. मेरे साक्षात्कार- विष्णुप्रभाकर, पृ. 232
4. सम्पूर्ण गाँधी वाम्य (खण्ड 18-जुलाई-नवम्बर 1920), प्रकाशन विभाग, पृ. 63
5. भारत के पुर्ननिर्माण में गाँधी जी का योगदान- डॉ. वीरेन्द्र शर्मा, पृ. 232
6. मेरे साक्षात्कार- विष्णुप्रभाकर, पृ. 108
7. बही, पृ. 94
8. बही, पृ. 26